

"KOLAHAL" is a collection of poems written by Jonali Borkar
& Published by Publication Cell, Mordha College, Mordha,
Dhemaj, Assam. Price: 100/-

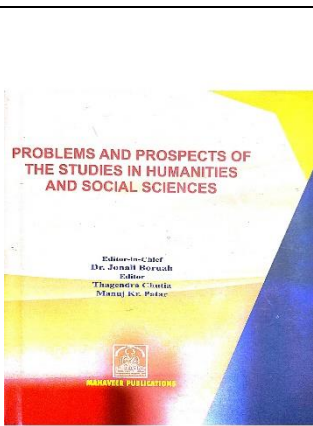
প্ৰথম সংস্কৰণ : জুলাই, ২০১৯

গ্ৰন্থস্বত্ব : প্ৰেমেিকা
ফোন : ৯৯৫৭৮-৩৫৬৮৮
ISBN: 978-93-84048-10-5

অনুব্ৰূণ : বিদ্যুত বাজক্ৰেয়ৰ
অক্ষয় বিদ্যালয় : ফৰীজ দেউৰী (ভাই), মেমৰি
বেটুপাত : কৌশিক বিদ্যালয়

মূল্য : ১০০.০০

মুদ্ৰক :
এচ কে বি, গুৱাহাটী - ৭৮১০০০
দুৰতায় : ০৩৬১-২৬৬৩৪১২



PROBLEMS AND PROSPECTS OF THE STUDIES IN HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES Edited by Dr. Jonath Boruah, Assistant Professor, Mahaveer College, Tezpur, Assam. Assistant Professor, Hailu College, and Hainan 45, Duan Assistant Professor, Kunming College, Guizhou, China. Dr. Mahaveer Publications as a part of Hainan College, Guizhou, China. Mahaveer Publications, India.

Published by:
Mahaveer Publications
 Jain Mandir Road, Chiraman Bazar
 Dibrugarh - 786 001
 E-mail: mahaveerpubs@gmail.com
 Mobile: 98644-30084
 www.mahaveerpublications.com

Copyright: all the rights reserved
 First Published: June, 2019
 Price: Rs. 250/-
 ISBN: 978-81-942385-6-9

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, or by any information storage or retrieval system, without the prior written permission of the publisher.

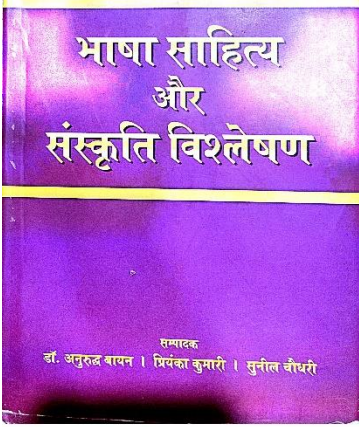
Editorial

Mahatma Gandhi, "The Father of the nation" one of the prominent socio-political thinkers of the 20th century. He had greatly emphasized the village sector. During the British period the colonialist imperial policy of Britain resulted in the retardation of the Indian economy. During that time India became the market for the raw materials of Britain. At the same time they got market for their goods from India cheap rates. In short, the British were built up for our good but for our evils. Therefore, some of the Indian leaders thought in terms of freedom from colonial rule to the remedy to solve the complex and poverty problem. Amongst them Gandhi is highly respected for village sector. He was successful in developing the village sector of the country. In each village was a Panchayat. The village of my dream is built in my mind. It is not only in the world of Mahatma. My ideal village will consist of the following things. They will not have electricity and doctors as a special service in the world. There will be neither pagan, nor thieves, nor landless, nor crop will be left and no one will waste in any form. Every year will have a contribution of the people.

The importance of Gandhi's thought is never to be neglected though it was criticized by some.

It is not only in the world of Mahatma. My ideal village will consist of the following things. They will not have electricity and doctors as a special service in the world. There will be neither pagan, nor thieves, nor landless, nor crop will be left and no one will waste in any form. Every year will have a contribution of the people.

The importance of Gandhi's thought is never to be neglected though it was criticized by some.

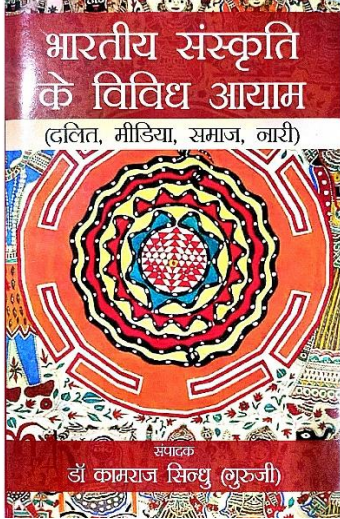


ISBN- 978-81-945453-2-5
 प्रकाशक : एकेडमिक पब्लिशिंग नेटवर्क
 18-ए, भोवानी / मजरा
 मद्रास, तिरुचे- 60002

पता: स्याहल्लि, परवेत, अलग- 781352
 संस्करण : 2020
 मूल्य : ₹ 850
 © प्रकाशक
 आवरण : क्लिष्ट पुरी
 कम्प्यूटर कम्पोजिंग : विजय रेडिओ इंटरप्रिन्टिंग
 नई दिल्ली-110016
 मुद्रण : कौन्सिल प्रिन्टर्स, दिल्ली-110002
 मोबा : 7678245992, 9667062877
 ई-मेल: apnetwork18@gmail.com
 वेबसाइट: <https://academicpublsh.in/>

Bhasha Sahitya Aur Sanskriti Vishleshan
 Book Ed. By Dr. Anuradha Baidyan, Priyanka Kumari,
 Sunil Chaudhary
 Published by Academic Publishing Network for
 Madhya Kamrup College and Shodhisamvaid Research Forum

15. अद्वैतिय धर्म के विकास में दार्ष्ट आयुष्य धर्म का योगदान	प्रिया कौट	101
16. उदयपुर युद्ध और लोक बरगोद के संघर्षों की भाषा-वैशेषी	डॉ. सुनील चाव्हारी	107
17. हरिदास राम बघेल और हरिदा सौदागी के आत्मकथाओं की तुलना	के.एन. देवी	114
18. रामदास मिश्र के उपन्यास में चित्रित नारी	डॉ. कवी जादवकर	119
19. सांस्कृतिक परिवर्तन और समकालीन हिन्दी साहित्य	डॉ. सोहन कोनराज, डॉ. डी. जगदीश	126
20. विचार के संश्लेष में विशाल	डॉ. ज्योत्सना बसना	134
21. प्रतीक और साहित्य संस्कृति	प्रियंका बाटा	142
22. भारतीय संस्कृति का वैश्विक परिवर्तन	अरिषा रायचौरी	144
23. भारतीय संस्कृति का बदलता स्वरूप	सुनील चाव्हारी	153



संख्या 948354
 4/5/2004 ई. 2009, जे.एच.टी. हाउस
 अंताही रोड, दीनानाथ, नई दिल्ली-110002
 दूरभाष : 23245808, 41564415
 फ़ोन : 9313458740
 E-mail : sanjayprakashan@yahoo.in

संपादक

ISBN: 978-81-954008-5-0

प्रथम संस्करण : 2021

मूल्य : ₹ 995.00

शब्द संयोजन :
 हर्ष कंभूटर्स
 दिल्ली-110086

मुद्रक :
 रोमान ऑफसेट प्रिंटर्स
 दिल्ली-110053

Bharatiya Sanskriti ke Vividh Aayam by
 Dr. Kamraj Sinha (Gurujee)

अनुक्रम

अध्याय	7
संस्करण	9
1. आर्य के कहानी में समाज का विशेषण	17
17. 22वीं सदी का दृष्ट	
2. असमिया समाज-संस्कृति में 'नामधर'	23
डॉ. जोनासी बरुवा	
3. भारतीय संस्कृति एवं साहित्य	32
डॉ. संतोषा सोनी	
4. नारी सशक्तिकरण में नीडिया का योगदान	40
डॉ. जोनासी बरुवा	
5. दलित साहित्य की सामाजिक पृष्ठभूमि	49
डॉ. सुनील	
6. हिंदी फिल्मों में दलित नारी का धार्मिक प्रतीकत्व	57
डॉ. सुनील	
7. ओमप्रकाश वाल्मीकि कृत 'बृहत्' : दलित जीवन की चौड़ा	65
एवं कविवर्य का अध्ययन	
डॉ. ममता देवी	

असमिया समाज-संस्कृति में 'नामधर'

डॉ. जोनासी बरुवा

प्रस्तावना

समाज विज्ञानों के पारम्परिक संदर्भों की एक व्यवस्था है। व्यक्ति समाज की एक इकाई है जो कि समाज के अंग है। समाज की संरचना को समझने के लिए समाजशास्त्रों जैसे कि समाजशास्त्र, समाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और अर्थशास्त्र विज्ञान का विचार करना है। इसी तरह समाज के अंगों को समझने के लिए समाजशास्त्रों का अध्ययन करना है।

संस्कृति किसी भी देश या प्रांत की अलग होती है, व्यवहार होती है। संस्कृति किसी भी समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसकी व्यवस्था से व्यक्ति समाज में व्यवहार करता है, जिसकी व्यवस्था से समाज में व्यवहार करता है और समाज के अंगों को समझने के लिए समाजशास्त्रों का विचार करना होता है। इसी तरह समाज के अंगों को समझने के लिए समाजशास्त्रों का अध्ययन करना है।

संस्कृति किसी भी देश या प्रांत की अलग होती है, व्यवहार होती है। संस्कृति किसी भी समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसकी व्यवस्था से व्यक्ति समाज में व्यवहार करता है, जिसकी व्यवस्था से समाज में व्यवहार करता है और समाज के अंगों को समझने के लिए समाजशास्त्रों का विचार करना होता है। इसी तरह समाज के अंगों को समझने के लिए समाजशास्त्रों का अध्ययन करना है।

संस्कृति किसी भी देश या प्रांत की अलग होती है, व्यवहार होती है। संस्कृति किसी भी समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसकी व्यवस्था से व्यक्ति समाज में व्यवहार करता है, जिसकी व्यवस्था से समाज में व्यवहार करता है और समाज के अंगों को समझने के लिए समाजशास्त्रों का विचार करना होता है। इसी तरह समाज के अंगों को समझने के लिए समाजशास्त्रों का अध्ययन करना है।



BEZBARUAHR SHRISTI ARU DRISTI : A Collection of Articles on criticism of Sahityarathi Lakshminath Bezbaruah, edited by Nivedita Bora Handique and Published by All Dhemaaji District Students' Union, Dhemaaji-787057 and printed at LC Spectrum, Guwahati-3.

First Edition : January 2021

Price : 350/-

ISBN : "978-93-89196-43-6"

@ সতী বেহিৰি জিলা ছাত্ৰ সন্থা

প্রকাশক : সতী বেহিৰি জিলা ছাত্ৰ সন্থা	বেজবৰুৱাৰ সৃষ্টি আৰু দৃষ্টি
প্রথম প্রকাশ : জানুৱাৰী, ২০২১	সম্পাদনা সমিতি
সম্পাদনা : নিবেদিতা বড়া সন্দিকৈ	উপদেষ্টা : ধীপাকে কুমাৰ নাথ, শৰণেশ্বৰজ্যোতি বৰুৱা, ড° ধীপক বৰগোহাঁই, মনুৱাৰ বৰুৱা, বাৰ্জীৱ গগৈ, সুভাষ কুমাৰগোহাঁই, যোগেশ্বৰ দাস, দীপক শৰ্মা, কল্যাণ গগৈ
শ্ৰেণীপাঠ : ধীপক বৰুৱা	সম্পাদনা : নিবেদিতা বড়া সন্দিকৈ
বৰ্ণনাৰূপে প্ৰকাশ আৰু অংশসমূহ : বেহ গৌতমা, জগন্নাথ বৰুৱা	সমস্যা : জেনেৰেলিছ হাজৰিকা, পুৰণী সুবৰ্ণ, মৃদুলা হাজৰিকা, হেমন্ত কৌণ্ড, কমলিৎ সোণোৱাল, দেবেন চেপেৰা
অধিবেশন : ৩৫৩/-	মুদ্ৰণ : এল এছ প্ৰেছপ্ৰিন্ট, ডাহাজুড়ী-৩
শ্ৰেণীস্থ স্থান : অসম বুক ষ্টাৰ্চ, পানবজাৰ	মুদ্ৰণ : এল এছ প্ৰেছপ্ৰিন্ট, ডাহাজুড়ী-৩

সূচীপত্ৰ

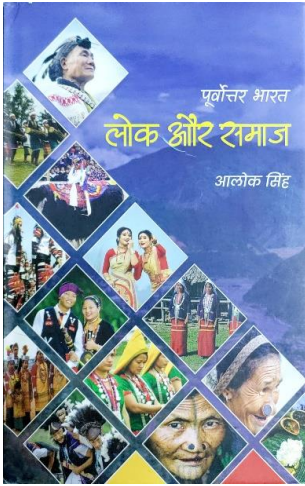
বেজবৰুৱাৰ জীৱনৰ কপবোখা

- মুখোৱাৰ বেজবৰুৱা.../০
- ড° নিল্ল বৰুৱা
- সৰ্বস্বত্বীয় লক্ষ্মীনাথ বেজবৰুৱাৰ দুই জীৱন পৰিচয়.../১১
- জনক বৰুৱা
- লক্ষ্মীনাথ বেজবৰুৱাৰ জীৱন স্মৃতি.../১০
- ড° জেনাৰেলিছ বৰুৱা
- লক্ষ্মীনাথ বেজবৰুৱাৰ স্মৃতি.../১০
- পৰী কলিতা
- লক্ষ্মীনাথ বেজবৰুৱাৰ স্মৃতি.../১০
- লক্ষ্মীনাথ বৰুৱা
- বেজবৰুৱাৰ স্মৃতি.../৩০
- কলিতা বৰুৱা
- বেজবৰুৱাৰ স্মৃতি.../৩০
- কলিতা বৰুৱা

লক্ষ্মীনাথ বেজবৰুৱা ব্যক্তিত্বৰ সুবৰ্ণ

ড° জেনাৰেলিছ বৰুৱা

আধুনিক অসমীয়া সাহিত্য ঐতিহ্যৰ এক বিলাস বিহীন সাহিত্যিক লক্ষ্মীনাথ বেজবৰুৱা। অসমীয়া অসমীয়া সাহিত্যিক হোৱা, সমাজ-সংস্কৃতিৰ প্ৰত্যেক স্তৰে বহুদৈৰ্ঘ্য বেজবৰুৱাৰ জীৱন আৰু সৃষ্টিৰ ফলস্বৰূপ। বেজবৰুৱাৰে লক্ষ্মীনাথৰ জীৱন আৰু সৃষ্টিৰ ফলস্বৰূপ। বেজবৰুৱাৰে লক্ষ্মীনাথৰ জীৱন আৰু সৃষ্টিৰ ফলস্বৰূপ।



पूर्वोत्तर भारत : लोक और समाज
 संपादक : आलोक सिंह
 ISBN : 978-93-90502-18-9
 मूल्य-450.00/-
 प्रथम संस्करण-2021

© आलोक सिंह

प्रकाशक
 सई भाभा ट्रस्ट
 J-49, Street No.-38, Rajgauri, Main Road
 New Delhi - 110059
 E-mail : sbtpublication@gmail.com
 Website : www.sarvbhastatrust.com
 Mob. : +91 81786 95606

मुद्रक : आर. के. ऑफ़सेट प्रोसेस, दिल्ली

PURVOTTAR BHARAT : LOK AUR SAMAJ
 by Alok Singh
 Price : Rs. 450.00

21. जनपदी के कलेजे का परीक्षण करने की पारंपरिक अनुपमानी की उपलब्धि से संवेदित 'सुपुत्री' नामक काले लोक गद्य - उपरंतु संस्करण	237
22. नाम लोक-लेखन में केंद्रित (संक्षुब्ध एवं लघु) की परंपरा (विशेषतः नाम जनजाति के विशेष संदर्भ में) - उपरंतु	251
23. 'निकर' - आरी लोक कथा - जगन साहित्य	258
24. जनजातीय समाज और स्थिति में नारी की स्थिति - उपरंतु साहित्य	263
25. मंगियु या वेग सौंदर्योत्सव - बालकन जलिका अखिल	268
26. अहिमा नाट और रामलीला : एक तुलनात्मक अध्ययन - डॉ. जैशवंती शर्मा	272
27. मेकायम का अनूठा लोकनृत्य "बं बाद् बेइ सिदकालाह" - एलमिन खिरकाज	285
28. 'है भी कोई देस है महाराज' में लिखित असम के चार बालक मधुरी की समस्यारं - अरवि प्रसेन	291
29. स्थिति में अनुभूतिकर और मानवीय मूल्य : पुनिस समस्यारं काही कलाओं का एक अध्ययन - सिद्धि. बी. धारतुनी	298
30. धाती समाज की सांस्कृतिक परंपरा - अमरिषा धारतुनी	306

अहिमा नाट और रामलीला : एक तुलनात्मक अध्ययन

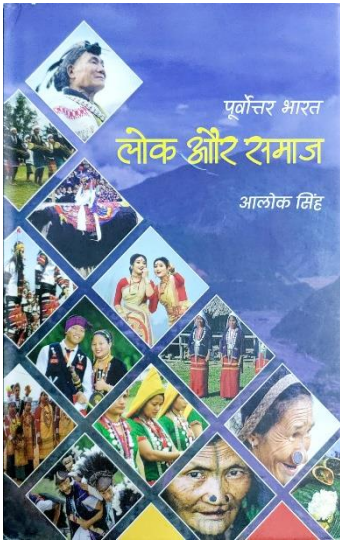
- डॉ. जैशवंती शर्मा

विषय श्रेणी : 'अहिमा नाट' असमिया नाट्य साहित्य के जनक मधुरिन शंकरदेव की अनूठी सृष्टि है। 'एकसारण' नाम धर्म के प्रसार साधन के रूप में लुप्त हो चुका है। एक ओर वहीं अहिमा साहित्य के संसार को समृद्ध किया वहीं दूसरी ओर असमिया संस्कृति की अभिजातिका में एक विशेष भूमिका भी निभाई। शंकरदेव ने उपलब्ध समाज के विचार, सहज-सहल लोगों के मन में कृमि बंधी थी तथा प्रकृतिक विषय, कुछ विद्वानोंके अनुसार समाज में निम्न वर्गों के सुने जाने वाले धाती को संस्कृत नाटकों का मंचन देखना मना था। शंकरदेव ने जल-जल के बदन में मुक्त होकर सभी वर्गों के लोगों को एक प्रकाश शंकरदेव का प्रथम सफल प्रयास था 'अहिमा' का मंचन। 'अहिमा' की सफलता के बाद शंकर देव ने ब्रह्मनी, संसार, लोक, नीत, धीर्या, नाट या नृप आदि उपरंतुओं में कुछ अहिमा नाटों की रचना की। शंकरदेव द्वारा लिखे गए नाटक 'अहिमा' पर, एनी प्रसाद, केलिगोपाल, हरिमणी हरण, पारिजात हरण और रामधिया शर्मा देव की परंपरा का निरंतर करते हुए उनके शिष्य मधुरदेव ने भी नाटकों की रचना की।

अहिमा नाटों का स्रोत

विगत समय (ई.स. 15वीं सदी के अंतिम भाग में) शंकरदेव ने लिखित नाट्य साहित्य का प्रारंभ किया उस समय आर्यविषय, संसार, अहिमा आदि लिखित नाट्य में लिखित नाट्य साहित्य का उदाहरण देखने को नहीं मिलता। कुछ विद्वान मियथी पाषा में लिखित 'उपनिषद्' नामक की रचना 'अहिमा नाट' (1325 ई.स.) को अहिमा भाषाओं और क्षेत्रों में प्रथम नाट्य साहित्य मानते हैं। शंकर देव ने अहिमा नाटों की लेखन शैली संस्कृत नाटकों से निष्पन्न थी। अहिमा नाटों की रचना शैली में संस्कृत नाटकों का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। विशेषकर अहिमा नाटों में नांदे, परसेन, अनुप या प्रसन्न, सतेजो का स्पष्ट

1. प्रकाशक, मीरा साहित्यिक, वरिष्ठ, देहली, असम
 पूर्वांतर भारत : लोक और समाज | 272



पूर्वोत्तर भारत : लोक जीवन समाज
 संस्कारक : आलोक सिंह
 ISBN : 978-93-90502-18-9
 मूल्य-450.00/-
 प्रथम संस्करण-2021

© आलोक सिंह

प्रकाशक
 सर्व भाषा ट्रस्ट
 J-49, Street No-38, Rajapuri, Main Road
 New Delhi - 110059
 E-mail : sbtpublication@gmail.com
 Website : www.sarvbhahatrust.com
 Mob. : +91 81786 95606

मुद्रक : आर. के. ऑफसेट प्रोसेस, दिल्ली

PURVOTTAR BHARAT : LOK AUR SAMAJ
 by Alok Singh
 Price : Rs. 450.00

11. शंकरदेव की रचनाओं में धारकावधार	159
- डॉ. श्रीमती बरक	
12. पूर्वोत्तर भारत के लोकगीतों पर एक शैलीगत का	165
सांस्कृतिक प्रयास	
- डॉ. सुनील कुमार शर्मा	
13. निवेदन : एक सांस्कृतिक परिचय	171
- प्रणव रतनकर	
14. आसामवास की शैल्युत्पत्ति संस्कृति	178
- डॉ. अनिल मोहन मिश्र	
15. असम में हिन्दी परामर्शक : एक तुष्ट	186
- सौमित्र	
16. पूर्वोत्तर भारत की बोझो महिलाएँ : संक्षेप वर्णन	196
- राहु बोझो (रा)	
17. आर्य समाज और संस्कृति : एक अवलोकन	302
- नीलमणि बरदोई	
- डॉ. नुरकान इस्मयिलोव	
18. अराकान्डा साहित्य के विकास में दूरिया नेत्रवाणी का	207
योगदान	
- ड्रुक गिष	
19. उत्तर-पूर्व की लोकगीतों में उपलब्धता 'परिचय की	220
संस्कृति'	
- सुनील कुमार	
20. शैल्युत्पत्ति नाटकों में विभिन्न-विधों का विकास	227
- श्रीमती अमिता बरसु	

शंकरदेव की रचनाओं में मानवतावाद

- डॉ. श्रीमती बरक

शंकरदेव गुण नाटक और गुण मूल्य हैं। इन महाकृतों में अस्मितावाद का अभाव है। अस्मितावाद को दूर करने हेतु शंकरदेव आधुनिक काल के इतर में अधिक से अधिक पाठ्य-प्रयोगों की शैलीय प्रयोगों में कला संस्कृति, साहित्य, समाज, धर्म, धार्मिक जीवन आदि सभी क्षेत्रों में एक समकालीन दिग्दर्शक के रूप में उभरे। उनकी रचनाएँ केवल मनोरंजन के लिए नहीं हैं बल्कि वे साहित्य के सभी संस्कृतियों को समृद्ध करने के लिए अस्मितावाद के सर्वोच्च स्तर पर उभरे हैं।

मानवता के विरुद्ध भक्ति आंदोलन के संदर्भ में मानवता के सर्वोच्च के रूप में महाकृतों में शंकरदेव का एक विशेष स्थान है। इन महाकृतों में अस्मितावाद का अभाव है। अस्मितावाद को दूर करने हेतु शंकरदेव आधुनिक काल के इतर में अधिक से अधिक पाठ्य-प्रयोगों की शैलीय प्रयोगों में कला संस्कृति, साहित्य, समाज, धर्म, धार्मिक जीवन आदि सभी क्षेत्रों में एक समकालीन दिग्दर्शक के रूप में उभरे। उनकी रचनाएँ केवल मनोरंजन के लिए नहीं हैं बल्कि वे साहित्य के सभी संस्कृतियों को समृद्ध करने के लिए अस्मितावाद के सर्वोच्च स्तर पर उभरे हैं।

अस्मितावाद अस्मिता के अभाव में उभरे हैं। इन महाकृतों में अस्मितावाद का अभाव है। अस्मितावाद को दूर करने हेतु शंकरदेव आधुनिक काल के इतर में अधिक से अधिक पाठ्य-प्रयोगों की शैलीय प्रयोगों में कला संस्कृति, साहित्य, समाज, धर्म, धार्मिक जीवन आदि सभी क्षेत्रों में एक समकालीन दिग्दर्शक के रूप में उभरे। उनकी रचनाएँ केवल मनोरंजन के लिए नहीं हैं बल्कि वे साहित्य के सभी संस्कृतियों को समृद्ध करने के लिए अस्मितावाद के सर्वोच्च स्तर पर उभरे हैं।

¹ डॉ. श्रीमती अमिता बरसु, दिल्ली, भारत

স্ত্রী-বহু



সম্পাদনা - ড° জোনালী বৰুৱা

■ বামকথাৰ অনুপম নাৰী চৰিত্ৰ...	ড° জোনালী বৰুৱা	১৯৬
■ নিৰ্মলা গুহুলৰ কাব্যত আদিবাসী...	ড° নলিনীকান্ত দত্ত	২০৭
■ মাহীমা, মনস্তত্ত্ব...	ড° স্মৃতিবেধা চেতিয়া সপিতৃকৈ	২১৪
■ কৃষ্ণ চৌবতীৰ জীৱন আৰু সাহিত্য	ড° মঞ্জুৱানী শইকীয়া	২২৬
■ "আপকা বন্ধী" নামৰ...	ড° ভূষণ দত্ত	২৩৪
■ Evolution of New...	ড° Dr. Rupjyoti Bhattacharjee	২৫০
■ Family and Violation...	ড° Dr. Deba Kr. Datta	২৫৭
■ Reason behind Low	ড° Dr. Bijoy Krishna Nath	২৭১
■ Gandhiji's Views On...	ড° Dr. Lima Baruah	২৭৯
■ Mahashweta Devi's ..	ড° Suravi Gohain Duwarah	২৯৪
■ Lovlina Bogohain...	ড° Jayanta Topadar	২৯৮

বামকথাৰ অনুপম নাৰী চৰিত্ৰ উৰ্মিলা ১

এক অধ্যয়ন

(‘সাকেত’ কাব্যৰ আধাৰত)

ড° জোনালী বৰুৱা

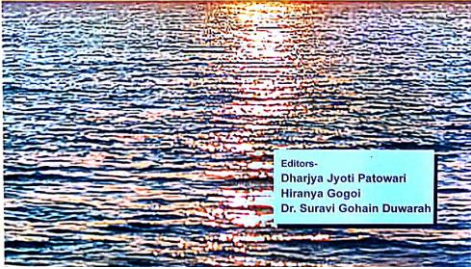
ভাৰতীয় সংস্কৃতিৰ সমৰ্থক, উন্নয়ন আৰু মৰ্মস্তম্ভ মৌখিকীচৰণ গুপ্ত হিন্দী সাহিত্যৰ এজন প্ৰথিতযশা সাহিত্যিক তথা এক উল্লেখযোগ্য অধিকাৰী। গুপ্তজীৱ যুগ-চেতনাই সম্পূৰ্ণ হিন্দী কাব্যাকাশ আচ্ছাদিত কৰি ৰাখিছে। তেওঁৰ বচনাত ভাৰতীয় সংস্কৃতিৰ পুনৰুত্থানকাৰী স্বৰ আৰু নবীনতৰ প্ৰতি বিশেষ আগ্ৰহ প্ৰত্যক্ষ কৰা যায়। গুপ্তজীয়ে হিন্দী সাহিত্য জগতক প্ৰদল কৰিছিল অনেককে অমৰ কৃতি। ইয়াৰ ভিতৰত ‘সাকেত’ আৰু ‘জয়ভাৰত’ মতকণ্য বিশেষভাৱে উল্লেখযোগ্য তথা প্ৰসিদ্ধ। ‘সাকেত’ বামকথাৰ বিঘৰক সৰ্বশ্ৰেষ্ঠ কাব্যগ্ৰন্থ। ইয়াৰ উপৰিও ‘ভাৰত ভাৰতেমু’, ‘জয়প্ৰথ বৰ’, ‘পদ্মবতী’, ‘শশোধৰা’, ‘আপৰ’, ‘নিৰ্দ্ধৰাজ’, ‘অনঘ’ আদি প্ৰবন্ধ আৰু মুক্তক কৃতি উল্লেখযোগ্য। মৌলিক ব্যচনাৰ বাহিৰেও গুপ্তজীৱ অনুমিত সাহিত্যত প্ৰেপত ৰূপলগীয়া। ইয়াৰ ভিতৰত ‘কন্যায়োত-ওমৰ বৈয়াম’, ‘মেঘনাথ-বন’, ‘দীৱাক্ষা’ আদিৰ নাম ল’ব পাৰি।

গুপ্তজীৱ কাব্যত পদ্যলিত তথা পবিত্ৰতাৰ শৃংখলাত আৰু ভাৰতৰ পূৰ্ণাৰ্ণৱৰণ বিওক্ষ স্বৰ শুনিবলৈ পোৱা যায়। মৌখিকীচৰণ গুপ্ত

স্ত্ৰী-বহু/১৯৬

OPEN HORIZON

A Bilingual Multidisciplinary Edited Volume
on Humanities and Social Science



Editors-
Dharjya Jyoti Patowari
Hiranya Gogoi
Dr. Suravi Gohain Duwarah

Open Horizon

35	বেবেত দাসৰ গায় : অৰ্পিতল এগীতি • ড° পূৰ্ণা বৰা গোস্বামী	272
36	শুক-পাক, মগ মূল, গছ ইত্যাদি : এক অধ্যয়ন • ড° বেণু বৰা	282
37	বহু জন্মগোষ্ঠীৰ ব্যক্তিগত উপসংহতন : এটি অধ্যয়ন • হেমা জোহাৰি পাটোৱাৰী	292
38	জয়মতী কুঁৱৰী: এক অধ্যয়ন (হুবলী, জনশক্তি আৰু সাহিত্যৰ আধাৰত) • ড° জোনালী বৰুৱা	299
39	মিষ্টি জ্বাৰৰ বিশ্লেষণ আৰু সৰ্বনাম : এটি নিৰ্লেখনাত্মক অধ্যয়ন • দুৰ্জয় প্ৰসাদ	307
40	অসমৰ প্ৰথম পৰিচয় : অৰ্থনৈতিক সন্মুখিতাৰ সোপান • ময়া বৰুৱা	323
41	সাংস্কৃতিক পটভূমি : হোঁপা বিহাৰ অতীত, বৰ্তমান আৰু ভৱিষ্যত • নিশু হাজৰিকা	329
42	বহু জন্মগোষ্ঠীৰ অন্যতম নৃত্য : হুনাৰৌণা • গৌতম হুনাৰৌণা	337
43	অসমৰ দুৰ্গম নট্যশাস্ত্ৰৰ ঐতিহাসিক আৰু সৰ্বমুখী নৃত্যত অন্তৰ্গত পৰিচয় - এক অধ্যয়ন • মন্মথকান্ত বৰ্মা	342
44	অসমত প্ৰাক-প্ৰাথমিক শিক্ষাৰ প্ৰবন্ধিকৰণ • দুৰ্জয় প্ৰসাদ	353
45	মিষ্টি জন্মগোষ্ঠীৰ পৰম্পৰাগত খাদ্যভাষ্যৰ ওপৰত এক চমু অৱলোকন • পৰ্বতী হাজৰিকা	362
46	সাংস্কৃতিক সংৰক্ষণ আৰু পৰিৱৰ্তনত বৈশ্বাত্মিক পৰামৰ্শমাৰ প্ৰভাৱ • নিৰুপমা ফুকন	369

38

জয়মতী কুঁৱৰী: এক অধ্যয়ন (হুবলী, জনশক্তি আৰু সাহিত্যৰ আধাৰত)

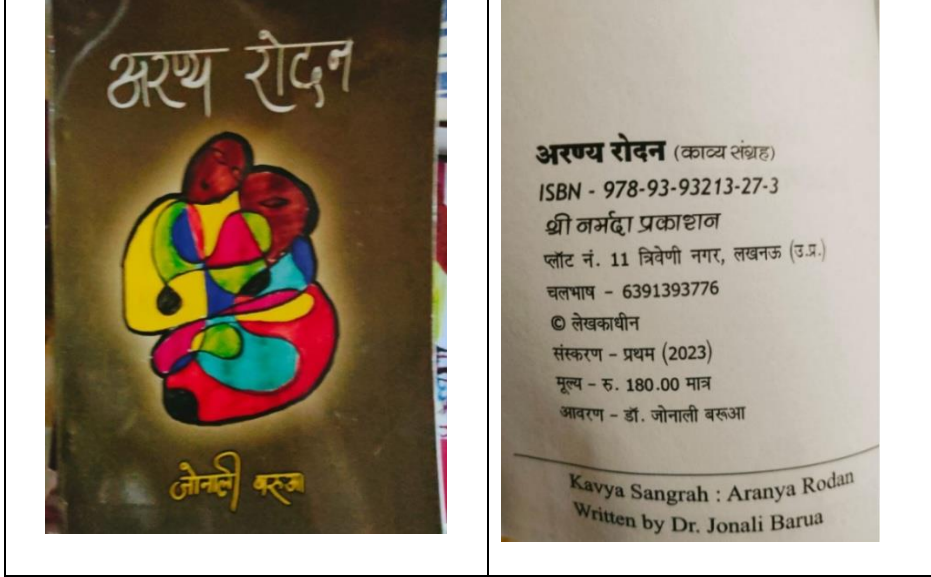
ড° জোনালী বৰুৱা*

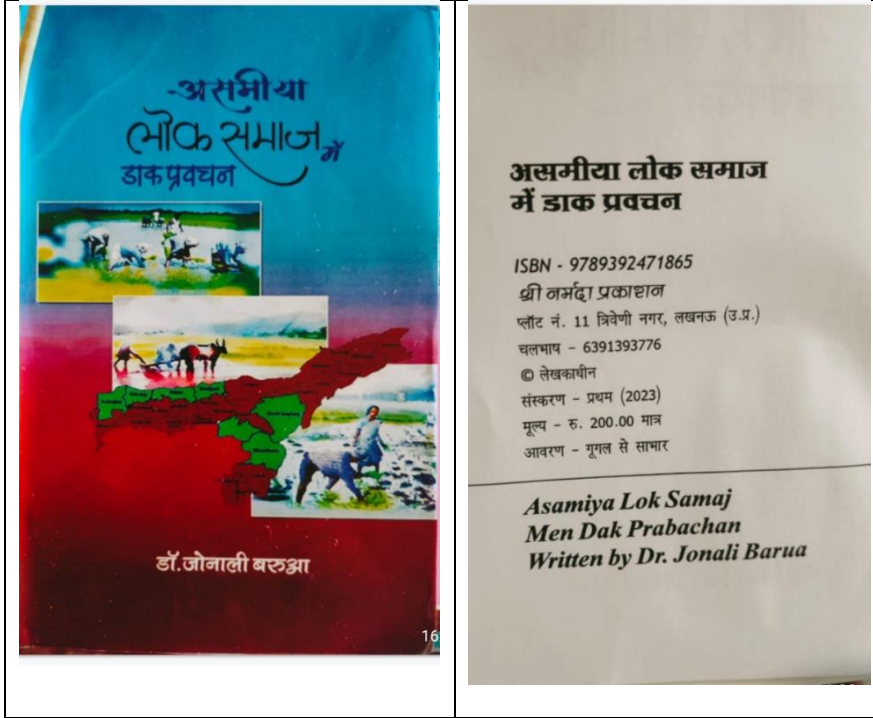
সংক্ষিপ্তসূচী

জয়মতী কুঁৱৰী অসমৰ ইতিহাসৰ এক অবিচ্ছেদ্য অঙ্গ। ইতিহাস ছবি বীজমত
জয়মতী কুঁৱৰীৰ আত্মজীৱনৰ শোকগাথা। নিৰ্ভয় আৰু ধাৰ্মিক পৰিবেশিত বহু
দিন ইচ্ছাশক্তিৰ সাহায্যত কবিতাৰ পাত্ৰ এনে অকল্পনীয় আছিল। স্বজাতিৰ বাবে
অকণা বাসনা ছুটি প্ৰাণ উৎসৰ্গা কৰা জয়মতীৰ কাহিনী চিৰ পৰিচিত। অসম
ৰাজ্যৰ বাসিন্দা এই অবিচ্ছেদ্য কাহিনীৰ বহু অধ্যয়ন আৰু বাৰ-বিবাৰে আৱৰ্তিত। হুবলী,
জনশক্তি আৰু সাহিত্যত উপলব্ধ জয়মতীৰ তথ্য প্ৰতিখনেই যোগ্য।
গুৰুত্বপূৰ্ণ অধিভাষ্য : জয়মতী কুঁৱৰী, ইতিহাস, আত্মজীৱন, স্বজাতি।

অসমৰ পৰম্পৰাগত সাহিত্য আৰু সাংস্কৃতিক প্ৰতিষ্ঠানৰে বৈ আছে আৰু অবিচলিত বৈ
আছে জয়মতী কুঁৱৰীৰ অসমৰ ইতিহাসৰ কাহিনীৰ কথা। নৱম্বাৰ নতম অৱস্থিত কাহিনী। অসমীয়া
অৰ্থনৈতিক অসমৰ চাৰেকি আঁকি নোৱাৰি, নোৱাৰি পূৰ্ণ কবিতাৰ মানচিত্ৰ। জয়মতী কুঁৱৰী
জয়মতী কুঁৱৰীৰ পৰম্পৰাগত সাহিত্যৰ পাত্ৰ এনে অকল্পনীয় আছিল। স্বজাতিৰ বাবে
অকণা বাসনা ছুটি প্ৰাণ উৎসৰ্গা কৰা জয়মতীৰ কাহিনী চিৰ পৰিচিত। অসম
ৰাজ্যৰ বাসিন্দা এই অবিচ্ছেদ্য কাহিনীৰ বহু অধ্যয়ন আৰু বাৰ-বিবাৰে আৱৰ্তিত। হুবলী,
জনশক্তি আৰু সাহিত্যত উপলব্ধ জয়মতীৰ তথ্য প্ৰতিখনেই যোগ্য।
গুৰুত্বপূৰ্ণ অধিভাষ্য : জয়মতী কুঁৱৰী, ইতিহাস, আত্মজীৱন, স্বজাতি।

* সংক্ষিপ্ত অধ্যয়ন, হুবলী নিৰ্ভয়, মৰিচা মহাশিক্ষালয়, বেংগাল, অসম।





অসমীয়া
লোক সমাজ
ডাক প্ৰবচন



ডॉ. जोनाली बरुआ

16

असमीया लोक समाज
मॅ डाक प्रवचन

ISBN - 9789392471865

श्री मर्मदा प्रकाशन

प्लॉट नं. 11 त्रिवेणी नगर, लखनऊ (उ.प्र.)

चलभाप - 6391393776

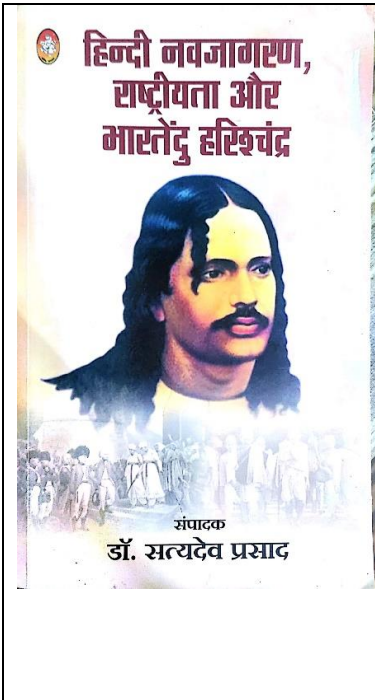
© लेखकापीन

संस्करण - प्रथम (2023)

मूल्य - रु. 200.00 मात्र

आवरण - गृहल से सामार

*Asamiya Lok Samaj
Men Dak Prabachan
Written by Dr. Jonali Barua*



● सर्वाधिकार सुरक्षित
कृपया को किसी मनुष्य में बिना अनुमति के प्रकाशित करने का अधिकार नहीं है। यदि कोई व्यक्ति को प्रकाशित करने में रुचि है, तो उसे प्रकाशक से लिखित रूप में संपर्क करना चाहिए। प्रकाशक को प्रकाशित करने का अधिकार है।

प्रालेक प्रकाशन
PRALEK PRAKASHAN
मुख्य कार्यालय : 702, 8-50, नईमन सिटी, गिरी (बरेilly), पूर्णिया, बिहार-221001
दिल्ली दफ्तर : 302, 8-50, नईमन सिटी, गिरी (बरेilly), पूर्णिया, बिहार-221001
E-mail : pralek.praakashan@gmail.com
Website : www.pralekprakashan.com
दूरध्वनि : +91 7021263557

हिंदी नवजागरण, राष्ट्रीयता और भारतेन्दु हरिश्चंद्र : संपादक : डॉ. सत्यदेव प्रसाद
Hindi Navjagaran, Rashtrayata aur Bharatendu Hrishchandra
Edited by Dr. Satyadev Prasad
ISBN : 978-93-5825-07-01
प्रथम पेरिपेटिक संस्करण : 2023
मूल्य : 390/-
© : सर्वाधिकार सुरक्षित
मुद्रक : श्रीमान् इन्डियन प्रिंटिंग, सीएलए
अवकाश एवं मुद्रण संस्था : अलेक प्रिंटिंग

(अलेक प्रकाशन का सर्वे विकसित चेतन की मुद्रणालय है।)

अनुक्रम

भारतेन्दु का जीवन परिचय : 17
-डॉ. कल्याणचंद्र उपाध्याय
भारतेन्दु की अनुकूल-गुणित एवं 'दुर्लभ' शैली : 25
-डॉ. राम शर्मा
नवजागरण का प्रारंभ और भारतेन्दु की भूमिका : 48
-डॉ. सीताराम शुक्ला
विशाल की विविध रचनाएँ : भारतेन्दु और डॉ. विशाल शर्मा का तुलनात्मक अध्ययन : 93
-डॉ. अशोक शर्मा
-नाटककार भारतेन्दु हरिश्चंद्र: एक अध्ययन : 103
-डॉ. श्रीमती अशोक शर्मा
नवजागरण के अनुकूल भारतेन्दु : 112
-डॉ. शैल शर्मा
भारतेन्दु के साहित्य में आधुनिकता की अभिव्यक्ति एवं नवजागरण के संदर्भ में रचनात्मक योगदान : 119
-डॉ. सुभाष चंद्र मिश्रा
भारतेन्दु हरिश्चंद्र की भाषाशैली : 121
-डॉ. अशोक शर्मा
-डॉ. अशोक शर्मा
भारतेन्दु हरिश्चंद्र की भाषाशैली : 136
-डॉ. शैल शर्मा
"भारतेन्दु हरिश्चंद्र की विचार-शैली" : 144
-डॉ. शैल शर्मा
"भारतेन्दु" का जीवन

नाटककार भारतेन्दु हरिश्चंद्र: एक अध्ययन
-डॉ. श्रीमती अशोक शर्मा

नाटक इत्येतत् काल्य के अंतर्गत आता है जो दर्शन द्वारा दर्शकों को हृदय में सत अनुभूति कराती है। रामचौला नाटक का प्रमुख उदाहरण है। नाटक का यह काल्यात्मक रूप है, जिसे अभिनेता, संगीत, नृत्य, कथोपकथन आदि के माध्यम से रसमय पर अभिनेता द्वारा व्यक्त किया जाता है। नाटक की रचना बहुत प्राचीन है। भारत में नवजागरण की रचना सबसे पहले हुई थी। यहाँ नीतिशास्त्र के अर्थ में आदर्श रूप दिखाने के लिए नाटक का प्रयोग किया गया है। नाटक में अनुकूलता तब की प्रथमता होती है। साहित्य की सभी विधाओं में नाटक ही वह विधा है, जिसमें अनुकूलता पर सर्वाधिक बल दिया गया है। अनुकूलता तब का प्रधानतः होता है जो नाटककार कल्पना का प्रयोग करता है। नाटक में कल्पना और अनुकूलता का गुरुर सम्बन्ध रहता है। वस्तुतः नाटक ऐसी अभिव्यक्ति विधा है जिसमें मनुष्य मानव जीवन रसक एवं कोमुलत पूर्ण वर्णन होता है।

हिंदी नाटक का अरम्भ भारतेन्दु हरिश्चंद्र से ही शुरुआत किया जाना चाहिए। प्राचीन भारतीय साहित्य में नाटकों की उत्पत्ति के दो स्रोत हैं। पहला संस्कृत से प्रकृत, प्रकृत से अपभ्रंस तथा बाद में हिंदी तक आने-आते संस्कृत की समृद्ध नाटक परंपरा नवजागरण से पुनः प्रदीप्त हुई। 13वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी तक मीमांसी नाटक रामलाला नाटक और चम्पक नाटकों का सुवर्ण युग रहा। संस्कृत नाटक के लक्ष्य का अर्थ है। अनेक युद्धों के बाद भी नाटक का विकास था। नाटक का अर्थ है। अनेक युद्धों के बाद भी नाटक का विकास था। नाटक का अर्थ है। अनेक युद्धों के बाद भी नाटक का विकास था।

हिंदी नवजागरण, राष्ट्रीयता और भारतेन्दु हरिश्चंद्र / 103

OPEN HORIZON

(Vol. II)

A Bilingual Edited Volume on Gender and Social Issues

Editors-

Dharjya Jyoti Patowari
Hiranya Gogoi
Dr. Suravi Gohain Duwarah

OPEN HORIZON

(Vol. II)

This volume is a bi-lingual edited volume on Gender and Social Issues

© Editors and Publication Cell, Moridhal College

First Edition: March 2023

ISBN : 978-93-84048-33-4

All Rights Reserved: No part of this publication be reproduced in any form by any means without the prior written permission of copyright owner.

The views expressed and conclusions drawn in this Volume "Horizon" Vol. II, published in March 2023 are solely attributed authors themselves. Neither the Editors nor the Publication Cell Moridhal College is responsible for the views, opinion and authenticity of data in anyway whatsoever.

Price: Rs. 600/-

Published by:
Publication Cell
Moridhal College, Dhemajai - 787057 (Assam)
Email: moridhalcollege@gmail.com

Printed at:
U. Dao Compuprints,
Main Road, Silapathar-787059, Dhemajai, Assam
Email: barua.pul@gmail.com

xvi

Open Horizon

17. নিক-পমা বৰগোহাঞিৰ "ক্ষমা জীৱন" আৰু "অভিসাধী" উপন্যাসৰ তৈৰিকৈ মনোৰাশিৰ প্ৰাৰম্ভ ৷ এক চমু আলোকপাত
• শ্ৰীমতী স্ৰীমা শৰ্মা
18. জ্যোতিপ্ৰসাদৰ নাটকত নাদীৰ সন্মতঃঃঃ
("আবেগৰ বিদিশী" আৰু "কপালীমা"ৰ আধাৰত)
• অক্ষয় দাস
19. ভৱশী ৱাউন : "জিমনটন মানুহটো" উপন্যাসৰ নাদী চৰিত্ৰ
• হৈথ জ্যোতি পাটোৱাৰী
20. আধুনিক সমাজ আৰু নাদী শিক্ষা
• বসন্ত দত্ত
21. মহিলা আৰু কন্যা শিশুৰ লগত জড়িত সমস্যা
• হিৰণ্য গগৈ
22. নাদীৰ মূৰ্ত্তাঃ বেজবৰুৱাৰ চুটিগল্প
আৰু কিছু আপেক্ষিক চিন্তন
• অৰুণিমা ভূঞা
23. ড° ভূপেন হাজৰিকৰ গীতত জনজাতীয়
আৰু জনগোষ্ঠীয় নাদীঃ এক আলোচনা
• ড° বেনু বৰা, মেঘৰ চুতীয়া
24. কোচ-ৰাজবংশীয় ইতিহাসৰ কেইটিমান
নাদী চৰিত্ৰ - এক চমু অন্বেষণ
• শান্তনা শইকীয়া
25. জ্যোতিপ্ৰসাদ আগৰৱালা "কপালীমা" নাটক
নাদী চৰিত্ৰঃ এক আলোচনা
• পূৰ্ণা বৰুৱা
26. মমু ভগৱাৰীৰ গল্পঃ এক চমু অধ্যয়ন
• ড° কেলানী বৰুৱা

26

মমু ভগৱাৰীৰ গল্পঃ এক চমু অধ্যয়ন


ড° জোনালী বৰুৱা

সংক্ষিপ্তসৰঃ

চুটি গল্প আধুনিক যুগৰ সৃষ্টি। প্ৰাত্যহিক জীৱনৰ অনেকেকে সন্দেহ তথা নান্দনিক ভাবে পঠকক আকৰ্ষিত কৰিব পৰা সক্ষমতাৰ কাৰণ সাহিত্যৰ অনেকে ঠাৱক সেই পেনাই চুটিগল্প সৰ্বজন প্ৰিয় তু প্ৰহৰ যোগ্য হৈ পৰিছে। প্ৰবাহমান জীৱনৰ পৰা গৱকৰণ অনুভূতি মাথো এটা প্ৰতীতি আহৰণ কৰে। প্ৰতীতি আহৰণৰ যোগেদি গল্পকাৰ ব্যক্তিত্ব প্ৰকাশ পায়। প্ৰতীতিক নিজা কৌশল প্ৰয়োগ আৰু নিৰ্ব চেতন মাথমেৰে আকাৰ দিয়ে আৰু কাহিনী নিৰ্মাণ কৰে।
হিন্দী সাহিত্যৰ বৰ চৰিত্ৰ লেখিকা মমু ভগৱাৰীৰ গল্পত নাদীৰ জীৱনমু পান আৰু পৰিবেশৰ সৈতে মোকাবিলা কৰা ব্যক্তিত্ব প্ৰাণবত হৈ শ পৰিলক্ষিত হয়। পাঠকৰ চিত্ত চেতনাত জীৱনৰেৰে অগাই তেমাৰ আশ্ৰ চেয়া কৰা এই পৰ্যকী লেখিকাই নাদী চৰিত্ৰ কেই গ্ৰাণ বিন্দু হিচাপে ই গল্পসমূহ বচনা কৰিছে।
গীৱন শব্দৰ পৰিবেশ, প্ৰমুদা, বিসম, অৰুক্ষ।

মমু ভগৱাৰী, হিন্দী সাহিত্যে জগতৰ এগৰাকী অন্যমন্য লেখিকা। মমু নাদীকল্পৰ প্ৰতি গভীৰ আগ্ৰহ থকা মমু ভগৱাৰীৰ সাহিত্যত নাদী বিভিন্ন ৰূপ

• সহযোগী অধ্যাপক, হিন্দী বিভাগ, মহিলা মহাবিদ্যালয়, বেথাল, অসম


 ISBN - 978-93-84211-71-4
মুখ্যমন্ত্রক
 প্রায় গুরু শঙ্কর
 শ্রীমন্ত শঙ্করদেব সঙ্ঘ
 ৯২ সংখ্যক বার্ষিক অধিবেশন
 পরিচালনা পর্ষদ
 মুখ্যমন্ত্রক
 প্রায় গুরু শঙ্কর
 শ্রীমন্ত শঙ্করদেব সঙ্ঘ
 ৯২ সংখ্যক বার্ষিক অধিবেশন
 পরিচালনা পর্ষদ
 মুখ্যমন্ত্রক

সম্মানিত : A Session published on the occasion of 92nd Annual Conference of Srimanta Sankaradev, Sampa, held from 10th to 12th February, 2023 at Paramananda Asha Samasraya Khetra, Srini-6, Haung Patha, Sagar-Nagreg, Sinesh Chhetri, Dikrupur, Jorhat, Assam, Edited by Dr. Manoj Pradhan Bora (Chief Editor) and Thakur Ch. Bora (Editor) and published by Dr. Kunal Gogoi, General Secretary, Reception Committee, 92nd Annual Conference of Srimanta Sankaradev Sangha, 2023.

মুখ্যমন্ত্রক
 ISBN - 978-93-84211-71-4
 শ্রীমন্ত শঙ্করদেব সঙ্ঘ
 ৯২ সংখ্যক বার্ষিক অধিবেশন, ২০২৩

মুখ্য সম্পাদক : ডাঃ মনোজ গগৈ সম্পাদক : ডাঃ মনোজ গগৈ সহসম্পাদক : ডাঃ অক্ষয় শর্মা (মুম্বাই শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (কলিকতা শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (চেন্নাই শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (হায়দরাবাদ শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (মুম্বাই শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (কলিকতা শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (চেন্নাই শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (হায়দরাবাদ শাখা)	মুখ্য সম্পাদক : ডাঃ মনোজ গগৈ সম্পাদক : ডাঃ মনোজ গগৈ সহসম্পাদক : ডাঃ অক্ষয় শর্মা (মুম্বাই শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (কলিকতা শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (চেন্নাই শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (হায়দরাবাদ শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (মুম্বাই শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (কলিকতা শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (চেন্নাই শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (হায়দরাবাদ শাখা)
--	--

অধিবেশন : ৯২ (৯২nd)
প্রকাশক : মুখ্যমন্ত্রক
প্ৰতিষ্ঠান : মুখ্যমন্ত্রক
সংস্করণ : ৯২
মুদ্রণ : মুখ্যমন্ত্রক

সম্মানিত : A Session published on the occasion of 92nd Annual Conference of Srimanta Sankaradev, Sampa, held from 10th to 12th February, 2023 at Paramananda Asha Samasraya Khetra, Srini-6, Haung Patha, Sagar-Nagreg, Sinesh Chhetri, Dikrupur, Jorhat, Assam, Edited by Dr. Manoj Pradhan Bora (Chief Editor) and Thakur Ch. Bora (Editor) and published by Dr. Kunal Gogoi, General Secretary, Reception Committee, 92nd Annual Conference of Srimanta Sankaradev Sangha, 2023.

মুখ্যমন্ত্রক
 ISBN - 978-93-84211-71-4

মুখ্য সম্পাদক : ডাঃ মনোজ গগৈ সম্পাদক : ডাঃ মনোজ গগৈ সহসম্পাদক : ডাঃ অক্ষয় শর্মা (মুম্বাই শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (কলিকতা শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (চেন্নাই শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (হায়দরাবাদ শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (মুম্বাই শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (কলিকতা শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (চেন্নাই শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (হায়দরাবাদ শাখা)	মুখ্য সম্পাদক : ডাঃ মনোজ গগৈ সম্পাদক : ডাঃ মনোজ গগৈ সহসম্পাদক : ডাঃ অক্ষয় শর্মা (মুম্বাই শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (কলিকতা শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (চেন্নাই শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (হায়দরাবাদ শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (মুম্বাই শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (কলিকতা শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (চেন্নাই শাখা) ডাঃ অক্ষয় শর্মা (হায়দরাবাদ শাখা)
--	--

শংকরদেব দ্বারা রচিত অনুপম গীত 'ব্রগীত'
 শ্রীমন্ত শঙ্করদেব সঙ্ঘ

শংকরদেব দ্বারা রচিত অনুপম গীত 'ব্রগীত'
 শ্রীমন্ত শঙ্করদেব সঙ্ঘ

শংকরদেব দ্বারা রচিত অনুপম গীত 'ব্রগীত'
 শ্রীমন্ত শঙ্করদেব সঙ্ঘ

**ADHYAYAN:
A BILINGUAL
MULTIDISCIPLINARY
VOLUME**

*Dr. Jonali Boruah
Milonjyoti Borgohain
Dr. Bhabani Saharia*



Editors
Dr. Jonali Boruah
Milonjyoti Borgohain
Dr. Bhabani Saharia

© First Published: 2023
Serials Publications (P) Ltd.

ISBN: 978-93-91844-51-6

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission from the editor and publisher.

Printed in India
SERIALS PUBLICATIONS PVT. LTD.
4830/24, Prahlad Street, Ansari Road, Darya ganj,
New Delhi-110002 (India)
Phone : 23245225, 23259207, 23272135
E-mail: serials@gmail.com